20

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-97-1

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 20
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

पान पराग

छियासैठ बर्ख पुड़ैत-पुड़ैत डॉक्टर सुनीलक पछुलका सभ नाओं या तँ हेरा गेलैन या तर पड़ि गेलैन। गाम अबिते नाओंए पड़ि गेलैन बुढ़बा डॉक्टर। ओना, जहिना बजरूआ घरक एकटा कोठलीमे पैसने कोठलीए-कोठली सभ घर टहैल लिअ तहिना बुड़हो डॉक्टरकेँ भेलैन। नीक विद्यार्थी आ नीक लगन रहने डॉक्टर सुनीलक पूछ आनसँ भिन्न। जहिना सीनियरो सभ 'सुनील बाउ' कहैन तहिना आन-आन स्टाफ 'सुनील बाबू' कहैन। जइसँ डॉक्टर सुनील भोथिया गेला।

दस बर्खक पछाइत जखन विभागाध्यक्ष भेला तखन 'प्रोफेसर साहैब' भऽ गेला। पहिलुका नाओं हेरा गेलैन। ओना, सोलहन्नी पहिलुका नै हेरेलैन थोड़-थाड़ रहबो केलैन आ थोड़-थाड़ बिसरेबो केला। किछुए दिनक पछाइत 'डॉक्टर भैया' आर किछु पछाइत 'डॉक्टर काका' आ सेवा निवृत्तिक पछाइत 'डॉक्टर बाबा' बनि दरभंगासँ गाम आबि गेला।

पुरनका आदैत सेहो शहरसँ गाम नेने एला। जेकर फल छेलैन चारि बजे भोरसँ पहिने अपन नित्य-क्रियासँ निवृत्त भऽ चाह-पीब पढ़ै-लिखैमे लगि जाइ छैथ। ओ वेचारे अपने रहैक घर बनौता तँए मकान बनबैक सभ काज अपने विचारसँ करता जे विचार बेटो दैत खर्चक चिन्तासँ मुक्त कऽ देलकैन। ओना, बेटा मुँह-छोहैने केलकैन, किएक तँ

अपनो कमाएल तेते छैन जे आनक खगते ने छैन, मुदा तैयो बेटाक बोलसँ आरो भरोस बढ़बे केलैन।

पौने छह बजिते बुड़हा डॉक्टरकेँ मनमे उठलैन- आब सबहक उठैक समय भऽ गेल, तहूमे राजमिस्त्रीक संग ने अखन चलब अछि तँए ओकरो सभकेँ उठा दिऐ। टेबुल दिस नजैर उठौलैन। पान परागक अन्तिम पुड़िया पहिने खा गेल छला। बिनु मन बनौने आगू बढ़ब नीक नहि। जगरनाथकेँ सोर पाड़ि कहलखिन–

"जगरनाथ, पान-पराग सठि गेल अछि, दोकानसँ नेने आबह।"

पैसा लऽ जगरनाथ विदा हुअ लगल आकि दोहरबैत कहलखिन–

"अखन दोकान खुजल हएत कि नहि?"

जगरनाथ मुँह खोललक–

"चाहवाली तँ अहूसँ पहिने उठि कऽ दोकान खोलि दइ छइ।"

चाहवाली दोकान खोलि दइ छै तइसँ पान-परागकेँ कोन मतलब छइ। पान-पराग तँ पानक दोकानक वौस भेल! दस-पनरह बर्खक बेदरासँ सबालो-जवाब करब नीक नहियेँ हएत, तखन अपन सबालक जवाब केना भेटत। एक तँ ओहिना पराग दुआरे मन थकिआइ छेलैन तैपर अमतीक ओझरीमे ओझराएब नीक नै बुझलैन, युक्ति फुरलैन बजला–

"दोकानमे पान-पराग कीनि, सैति कऽ जीबीमे रखि लीहऽ आ घुमतीकाल मिस्त्री सभकेँ देखने अबिहऽ जे उठल कि नहि।"

एक तँ ओहिना जगरनाथ नोकर, तहूमे जगरनाथेक सोझहामे पिता स्वयं कहा-बधी बुड़हा डॉक्टरसँ करा नेने छला जे काजक बेरमे जगरनाथ काज करत आ खाली समयमे पढ़बए पड़त। ओना, बुड़हा डॉक्टरक अपने मनक बात चन्दन बाजल। मनक बात ई जे शरीरसँ बुढ़ भेने लोकक देह हहैर जाइ छै, तइसँ मनक शक्ति थोड़े घटै छइ। मुदा जखन

परिवारेसँ हटि रहल छी जे कहबो केकरा करबै, तखन तँ यएह ने जे लगमे रहत ओकरेसँ ने गप-सप्प करब... ।

गबैयाक लेल जहिना कहबी, वाणी, साखी, झारू, दोहा, चौपाइ, छपाइ इत्यादिमे एके रस भेटै छै तहिना ने आनो-आनकेँ भेटै छइ। तँए चन्दनक करारमे कोनो संशोधन करबे ने केलैन।

दरभंगा रेडियो स्टेशनसँ छ-पाँचक स्वास्थक समाचार प्रसारणमे तमाकुलसँ बनल वस्तुक निन्दा एकटा डॉक्टरक मुहेँ प्रसारित भऽ रहल छेलइ। तीनू राजमिस्त्री नीन तोड़ि पड़ले-पड़ल समाचार सुनि रहल छल। मिस्त्री सभसँ एक लग्गा पाछुए जगरनाथ रहै तखने एकटा मिस्त्री बाजल–

“सभटा झूठ-फूस बजनाहार सभ छी।”

बिच्चेमे दोसर मिस्त्री टपकल–

“भाय, काज तँ सभ करबे करैए कियो मूडसँ करैए कियो भाँज पुरबैए।”

तेसर मिस्त्री सिरमापर मुड़ी उनटबैत बाजल–

“हौ, केकरो सीमा-नाङैर नै छइ। ने डॉक्टरक कहने हएत आ ने नै हएत, होइ छै अपना किरतबे। जँ ओकरा केने होइतै तँ अपने किए सिगरेट पीब कऽ छातीए जरा लइए?”

डॉक्टरक चर्च सुनि जगरनाथ डेग छोट कऽ लेलक। काजमे हाथ लगैबते डॉक्टर साहैब जगरनाथकेँ कहि देने छेलखिन। कहने ई छेलखिन- ‘जखन-के मिस्त्री सभ आराम करैए तखन-के तोहूँ जा कऽ ओकरे सभ लग बैसिहऽ।’ तेकर कारण मिस्त्री सबहक नीक-बेजए बुझब छेलैन। सोचो साफ छैन, साफ ई छैन जे जखन आँखिक सोझहामे श्रम करैए तखन जँ मनोनुकूल सुविधा नै भेटै, से अनुचित भेल। जैठाम घटकिनियाकेँ बढ़किनिया कहै छै तैठाम जँ रामनाम करैत जीब लइ छी

सएह बहुत। जगरनाथकेँ देख मस्त्री बाजल–

“बौआ, तूँ नोकर छहक, जा कऽ डॉक्टर साहैबकेँ कहियौन जे छहटा पान-परागक खर्च अछि, से अपन रोजमे सँ लगैए।”

मिस्त्रीक समाद सुनि जगरनाथ विदा भऽ डॉक्टर साहैब लग पहुँचल। जगरनाथक जेबीमे पान परागक पुड़िया देख जानमे जान डॉक्टर साहैबकेँ आबि गेल छेलैन। जगरनाथोकेँ बुझल जे मालिक-मलिकानक काज मूड बनला पछाइते होइ छै, तँए पुड़ियाकेँ खोलि मुँहमे झाड़ैक प्रतिक्षा करैत रहए जे करवन दाँतसँ काटि मुँहमे खसौता। सएह केलैन मनमे फुन-फुनी उठिते बुड़हा डॉक्टर बजला–

“मिस्त्री सभ उठल कि नहि?”

उठैक जवाब दइसँ पहिने जगरनाथ बाजल–

“बाबा, मिस्त्री सभ उपराग दइए?”

जगरनाथक उपराग सुनि बुड़हा डॉक्टर ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे नान्हिटा बच्चा केते समटल बाजल। दोहरा कऽ पुछब नादानी हएत। कोनो कि मिस्त्री आन छी, काज दुनू गोरे अपना-अपना लूरिये-बूधिये करै छी, मुदा काज तँ सभ घरेक करै छी...।

पान-परागक एगारहो पुड़ियाकेँ समेट बुशटक जेबीमे रखि आगू बढ़ि मिस्त्री लग पहुँचला। मनमे उठलैन सुति कऽ उठैएकाल जँ अलिसा जाएत, तँ भरि दिनक रौद केना डगडगी आबए देतइ। युक्ति फुरलैन महाजनीक टोनमे मिस्त्रीकेँ कहलखिन–

“अहाँ सबहक चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल आ अहाँ सभ ओछाइनो ने छोड़लौं हेन?”

पान-परागक नाओं पहिने दुनू मिस्त्रियो सुनि नेने छल। बुड़हा डॉक्टरक बात सुनि सुनलाहा मिस्त्री बाजल–

“ऐ कोढ़ियाकेँ देखै छिऐ, एहेन खेबैया अछि तँ रातियेमे ओरिया कऽ किए ने रखि लइए?”

मिस्त्रीक बात सुनि बुड़हा डॉक्टर बजला–

“कथी रखि लइत?”

“अहीले ओछाइन नै छोड़ैए।”

कहि जेबीसँ पान-परागक पुड़ियाक लच्छा आगूमे फेकि देलखिन। मुदा एके गोरे खाइत। हाथमे पुड़ियाक लच्छा पाबि मिस्त्री बाजल–

“डॉक्टर साहैब, भरि दिनमे छहटा पुड़िया खाइ छी।”

“केते दिनसँ खाइ छह?”

आस पाबि मिस्त्री बाजल–

“से कि कोनो दिन-महिनाक लिखा-पढ़ी करै छी, भरि दिनक कमाइसँ भरि दिन जीब लेलौं, तँ ऐसँ बेसीक आशा अनेरे किए करब। पहिने शिखर खाइ छेलौं, रेडियो-अखबार थोड़े पढ़ै छी जे आन ठीनक बात बुझबै, मुदा जइ दिन गामेमे एक गोरे शिखर खाइत-खाइत मरि गेल तइ दिनसँ हमहूँ छोड़ि देलिऐ।”

मिस्त्रीक बात सुनि डॉक्टर साहैबक मन उचटए लगलैन। उचटए ई लगलैन जे अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ए चाहै छी...।

काम-काजी डॉक्टर साहैब जे एको मिनट समय नै छोड़ए चाहैथ। ओना, जखन मिस्त्री लग एला तखन मकानक बात करितैथ, से नै भऽ शिखर-परागमे लगि गेला। तैबीच पाछूसँ जगरनाथो चाह नेने आएल। जहिना जेबीमे बेसी पाइ रहने पाँच-दसकेँ हेराइक महत नै होइ छै तहिना पान-परागक जगह कॉफी देल चाह आबि गेलैन। घूसक रूपैआ देख जहिना घूसखोर दस दिन आगूओ काजकेँ निपटाबए चाहैए तहिना शिखर-परागक गपकेँ बिरमित करैत डॉक्टर साहैब बजला–

“देखियौ, जहिना तमाकुलक रंग-रंगक वस्तु बना ओकर शक्तिकेँ कम-बेसी कऽ लोककेँ पोल्हा-पोल्हा खेबाक चहैट लगबैए तहिना तँ चाहो ऐछे, तहूमे जँ कॉफी फेँटि देलिऐ तँ आरो बेसी रंग चढ़ा दइ छइ। तेतबे किए, एकटा संगी छैथ ओ चाहेमे अफीम फेँटि दइ छैथ। खाएर छोड़ू ऐ बातकेँ।”

बुड़हा डॉक्टर साहैबक बात पतराएलो ने छेलैन आकि बिच्चेमे दोसर मिस्त्री कॉफीक चुस्की लैत टोकलकैन–

“डॉक्टर साहैब, अखने कनी पहिने तमाकुलक खिधांस रेडियोमे सुनलौं..?”

मिस्त्रीक बात सुनि बगलमे ठाढ़ जगरनाथ बाजल–

“अहाँ तँ रेडियोक समाचार कहै छी, सत् बजैए आकि फूसि तइ पाछू अनेरे किए वौआएब। डॉक्टर बाबा पढ़बैकाल तीन दिन कहलैथ।”

कहि डॉक्टर साहैबपर नजैर देलक। सोझमे पड़ल जहिना कोनो वस्तुक विचार लोक सोचै-विचारैले नै रखि, देखते निर्णय कऽ लइए, तहिना डॉक्टर साहैब निर्णय करैत बजला–

“मिस्त्री दुनू गोरे एके रंग भेलौं, जहिना शरीरसँ हम भेलौं तहिना श्रमसँ अहाँ भेलौं, जीबैक दुनू गोरेकेँ अछि, जँ से नै अछि तँ किए ने रौटीए खसा रहितौं, कोन खगता अछि एहेन मजगूत घर बनबैक।”

डॉक्टर साहैबक विचार सुनि मिस्त्री सकपकाएल। मुदा चाहक लहकी मनमे लहैक गेल रहइ। बाजल–

“बाबा, अहाँक पएर छूबि कहै छी- आइ दिनसँ पान-पराग नै खाएब।”

मिस्त्रीक बात सुनि डॉक्टर साहैबकेँ अपन बड़प्पन नै बुझि पड़लैन, तेकर कारण भेलैन जे विवेकी मन धकियबैत कहलकैन हमर पएर छूबि सप्पत खाएब उचिन नै भेल। ओ छहटा पुड़िया भरि दिनमे

खाइए, अपने पनरह-बीसटा खाइ छी। पएर छूबि सप्पत खाएब तँ ओ ने भेल जे अहाँक सीखसँ अपन लीख धड़त। आ जँ से धड़त तखन तँ छहटा पुड़ियाकेँ पनरह-बीसटा बनबए पड़त! मुदा ईहो तँ उचित नहियेँ हएत जे मुँह खोलि कहि दिऐ।

ततमत् करैत बुड़हा डॉक्टर साहैबक मनमे एलैन भक्तो ने ओहने भगवानसँ प्रेम करैए जे अपना अनुकूल होइ, मुदा भक्तक रक्षा करब तँ भगवानक कर्तव्य भेलैन! नीक हएत जे अखनसँ हमहूँ पान-पराग छोड़ि दी, खाइ-पीबैले अधले चीज छै आ नीक चीज नै छइ। तइसँ ईहो हएत जे अपनो औरुदा बढ़त। तहूमे मिस्त्री कि कोनो पैछला सप्पत खेलक आकि ऐगला खेलक...। मन फुरफुरेलैन। बजला–

"बौआ जगरनाथ, जखने जागी तखने परात। अखन धरि जे तोहर निश्छल निर्मल जिनगी रहलह, ओहने हमरो भेटए, तँए तोड़े सप्पत खा, आइसँ पान-पराग छोड़ि देब।"

तेसर मिस्त्री जे अखन धरि अपन मन साधि मुँह बन्न केने छल ओ अपन बजैक समैयक गर पौलक। गर ई पौलक जे पान पराग-शिखरक कटा-कटी भऽ गेल। बाजल–

"बाबा, अहाँ जे एते कमेलिऐ से अहीले तीनमहला छोड़ि एकमहलमे बुढ़ाड़ी बिताएब?"

मिस्त्रीक बात डॉक्टर साहैबकेँ अधला नै लगलैन। तहूमे चाह-कॉफीक रंगसँ मनो चढ़ले रहैन। बजला–

"बौआ, अखन तूँ बच्चा छह तँए जिनगीक तीत-मीठ ओते नै बुझै छहक। देखहक आब कि हमरा शहर-बजार दिस तकैक अछि, अपन जे गाड़ी छल सेहो पुतोहुएकेँ दऽ देलिऐन। बेटाकेँ ससुरे देने छथिन। कट्ठा भरि घराड़ीक बीच शेष दिन बितबैक अछि। आने-आन देख कऽ ने लोक अपन जिनगीक ठेकान पबैए। कहाँ किनको देखै छिऐन जे साए बर्ख

टपला अछि। तखन तँ भेल पनरह-बीस बर्ख निरोग बनि जीब ली।"

मिस्त्री बाजल–

"तीनियेँटा कोठरीक मकानमे रहब नीक लागत?"

बुड़हा डॉक्टर–

"से ते मनमे हेबे करत, मुदा ओही मनकेँ रेबाड़ि-रेबाड़ि पकैड़ अपन जिनगीक संग ने रगड़बै। तहूमे दुइए परानी भेलौं आ तेसर जगरनाथ भेल। अनेरे कम्पाउण्डर-नर्स इत्यादि रखैक कोन जरूरत अछि। जे रोगी औत ओकरा देखऽ-सुनि लेबै। तइले बेसी घरक खगते कोन अछि। चारूकात छहरदेबाली जोड़ि घेरि देबै, अपना रहैक, खाइ-पीबैक आ नहाइ-धोइक घर सहिटमे बनल रहत तइसँ किए आसकैत हएत। आसकैत तँ ओइठाम होइ छै जैठाम निच्चाँ-ऊपर सीढ़ी टपए पड़ै छइ।"

मिस्त्री–

"जँ कहियो बेटा-पुतोहु औता, तखन ओ सभ केतए रहता?"

"ऊपरमे तँ खालीए रहत किने, अबैएकाल विचारि लेता जे केते समय रहैक अछि तइ हिसाबसँ अपन ओरियान केने औता।"

डॉक्टर साहैबक बात सुनि दोसर मिस्त्री बाजल–

"मन-तन खराप हएत, तखन की करबै?"

मिस्त्रीक बात सुनि बुड़हा डॉक्टर खिल-खिला कऽ हँसैत बजला–

"अपनो ने डॉक्टरो छी। आन रोगीक बात नहियोँ बुझबै किएक तँ बहुत बात बहुत रोगी बजितो ने अछि, मुदा अपन देहक पीड़ाक अनुभव तँ अपने हएत। तइ हिसाबसँ हिफाजत केने तँ काज चलि सकैए। तखन तँ ई देहे काँच-माटिक बनल अछि, एकर केते बिसवास।"

मिस्त्री बाजल–

“बाबा, अपने काजकेँ पछुअबै छिऐ जेतेकाल गप-सप्प करबै तेते देरी हएत।”

❑ **साभार : अप्पन-बीरान**

फोंक मकड़

किशोर आ किसलय मिथिला युनिवर्सिटीक एम.ए.क छात्र। भूगोलक छात्र किशोर आ संस्कृत साहित्यक किसलय। एके कौलेजक दुनू छात्र। छह सालक बीच दुनूमे एहेन सम्बन्ध बनि गेल जे जाति-पाँजि बुझैक खगते ने रहलै। एक कोठरीक बास, एक वर्तनक बनल भोजन, एक सुराहीक पानि सम्बन्धकेँ आरो गतिगर बना देने। जइसँ आन तँ आने जे अपनो दुनूक बीच गाम-घर हेरा जाइ। ओना, दुनूक घर गंगाक दुनू भाग, एक 'मिथिलांचल' दोसर 'मगह' मुदा सम्बन्ध तेहेन बनि गेल जे उत्तर-दच्छिनक बान्ह ढील भऽ गेल। साले-साल दुनू गोरे बेरा-बेरी अपन-अपन इलाकाक दर्शनीय जगह सेहो देखैत आएल, जइसँ देवघरसँ राजगीर आ जनकपुरसँ कोसी-कमला घाट तकक भ्रमण संगे कऽ नेने छल। सैयो छात्रक बीच दुनूक अपन सम्बन्ध बनल छल तँए दोसरकेँ बेसी खोदो-वेद करैक खगता नहियेँ जकाँ रहए। रहबो किए करतै, सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, जिनगीक लीलसा छै आ लीलसाक काज छइ। जँ से नै रहत तँ खाली टोंटाक छुच्छे अवाजसँ कथी हएत...।

छठम बर्खक अन्तिम समय आबि गेल। किछुए दिनक पछाइत एम.ए.क परीक्षा शुरू हएत जे डेढ़ मास धरि चलत। परीक्षाक पछाइत दुनू अपन-अपन जिनगीक मोड़पर सँ मुड़ि घर-परिवार दिस बढ़त...।

दसम दिनसँ परीक्षा। कोठरीमे किशोर आ किसलय बैस अपन-अपन डायरी उनटबैत रहए। उनटबए ऐ दुआरे लगल रहए जे केकरा ऐठाम किताब अछि वा केकर किताब अनने छिऐ, केकर पैंच-उधार छै सभ फरिया लेब नीक हएत। जाबे धरि ऐठामक दाना-पानी छल, पुड़ेलौं। डायरी उनटबैत किशोरक नजैर चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेलापर पड़ल। पड़िते चौंक गेल जे तीन सालसँ नियारैत आएल छी, अखनो पछुआएले अछि। तैबीच केते नव-नव काज आएल-गेल। डायरी उनटा कऽ रखि किशोर बाजल–

“पार्टनर, एकटा काज तीन सालसँ पछुआएल अछि, आब तँ सहजे परीछेक समय आगू अछि तँए..?”

तीन साल पछुआएल सुनि किसलयक मनमे खरोंच जकाँ भेल, खरोंच ई जे जखन सोझहामे अबैत काजकेँ निपटबैत गेलौं तखन तीन साल केना पछुआ गेल। मुदा बिना काजक चर्च भेने किछु विचारलो तँ नहियेँ जा सकैए। पुछलक–

“कोन काज?”

किशोर–

“ओना, हमरो नजैरसँ हटिये गेल छल मुदा डायरी उनटैबते धक दे मन पड़ल। चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेला।”

किशोरक बातकेँ किसलय काट-खोंट करब नीक नै बुझलक जे तीन सालक काज पछुआएल किए। पहिल साल नियारैत-नियारैत बीति गेल, दोसर साल परीछे आबि गेल, तेसर साल तेहेन शीतलहरी भेल जे घरसँ निकलब कठिन भऽ गेल।

तीनू बर्खक सुढ़िआएल हिसाब देख किसलयक मन आइपर पड़ल। परसू पूस बीति रहल अछि पाँचम दिन रबि छी, मकड़क मेला रबियेकेँ होइ छै, तखन किए ने परीक्षासँ पहिने पुराइए ली। किए ओहू

वेचाराकेँ मनमे टँगल रहत जे मकड़क मेला नै देखलौं। बाजल–

"पार्टनर, संयोग नीक अछि दसम दिनसँ परीक्षा छी, तैबीच मकड़ोक मेला शुरू हएत। दुइए दिनक तँ बरदाहट अछि, शनिकेँ दरभंगासँ चलि गाम जाएब आ दोसर दिन जलधार करैत, मेला मनबैत साँझ धरि घुमि कऽ चलि आएब। बेसी दिन पहुनाइ करैक समेओ ने अछि जे बेसी समय गमाएब।"

जइ दिन किशोरो आ किसलयो कौलेजमे नाओं लिखबए आएल, तही दिन नाओं लिखौला पछाइत कौलेजक गेटपर दुनूक भेँट भेल। दुनू अनभुआर, मुदा इलाकाक रहने किसलय कम अनभुआर आ किशोर बेसी। नाओं लिखौला पछाइत डेराक खगता दुनू गोरेकेँ। मुदा अनभुआर जगहमे पुछबो केकरा करत। पुछबोक तँ जगह होइ छइ। एक-दोसरपर नजैर पड़िते, अपन बेथा-कथा कहैक मन दुनूकेँ भेल। मुदा अगुआ कऽ के बाजत। अपन सभ छान-पगहा तोड़ि किशोर बाजल–

"भाय, अहूँ नाओंए लिखबए आएल छेलौं?"

किसलय–

"हँ।"

किशोर–

"अहाँक घर अही इलाका छी?"

किसलय–

"हँ, मधुबनी जिला।"

किशोर–

"अहाँ तँ ऐ जगहक सरोकारी छी, केते लाट-घाट हएत, केतौ हमरो रहैक ओरियान कऽ दितौं?"

किशोरक प्रश्न सुनि किसलय गुम भऽ गेल। मनमे उठलै, केकरो

रहैक ठौर, दरबज्जापर आएल पाहुनकेँ एक लोटा पानिक आग्रह, तहूमे बहरबैयाकेँ। गुमकी तोड़ि किसलय बाजल–

"चाहक दोकानपर चलू, चाहो पीब आ आगूक गपो-सप्प हेतइ।"

दोकानक बीचक बाटक बातमे विराम लगि गेल। चुपा-चुप धुपा-धुप दुनू गोरे चाहक दोकानपर पहुँचल। दोकानदारीक बेर उनैह गेल तँए गहिंकीसँ दोकान खाली। दोकानदार अपन बेरुका दोकान चलबैक गर लगबैत रहए। दोकानसँ कि सभ आनए पड़त, खर्चक हिसाब जोड़ि पुरजियो आ रूपैओक हिसाब बैसा लेलक। दोकानमे किशोर आ किसलयक प्रवेश होइते दोकानदार दोकानक भार सुमझबैत बाजल–

"भैयारी, ताबे अहाँ दुनू गोरे बैसू, घन्टा भरिमे दोकानक काज केने अबै छी, तखन चाहो पीआ देब। तैबीच जँ पिआस लगल हुअए तँ बाल्टीनमे पानि अछि पीबू।"

एक तँ बजरूआ दोकान, केकरा ओते पलखैत छै जे दोकानपर बैस गप करत आकि दोकानदारे बैसए देतइ। मुदा से नै, दोकानदारो एहेन जे अनठियाक हाथमे घन्टा भरिक खातिर दोकाने सुमझा देलक।

किशोर बाजल–

"भाय, हम तँ सभ तरहेँ अनभुआर छी, जेकरो संग कोनो लेन-देनक गप करब, बोलीसँ परेखि अनठिया बूझत। चिन्हार-अनठियामे तँ किछु अन्तर भइये जाइ छइ।"

मुड़ी डोलबैत किसलय बाजल–

"हेबे करै छइ।"

किशोर–

"अखन अहूँ विद्यार्थी छी हमहूँ छी, विद्याध्ययन ले एलौं अछि। ओना, असगरोक डेरा होइ छै, मुदा असगरूआ नै बनए चाहै छी, तँए

नीक हएत जे दुनू गोरे एकेठाम रहितौं?”

किशोरक विचारकेँ मानितो किसलयोक संग समस्या रहइ। समस्या ई जे किशोर आन इलाकाक अनभुआर आ अपने इलाकाक अनभुआर छी। जखन गामक लोक गामक बातसँ अनभुआर रहैए तखन आन-गाम तँ सहजे आने गाम भेल। तही बीच चाहक दोकानदार आएल। सभ सामानक खल लगबैत दुनूक बीच आबि बाजल–

“घन्टा भरिसँ ऊपरे दोकानक ओगरवाहि दुनू गोरे केलौं अछि, चाह अपना दिससँ पीआएब।”

चाहक आश जेना दुनूक मनमे आस मारलक। पानि पीलौं, चाह पीब, एतेकाल बैसलौं। किसलय बाजल–

“भैयारी, दुनू गोरे कौलेजमे नाओं लिखेलौं हेन, बाहर रहै छी, एकटा डेराक भाँज केतौ नै अछि?”

‘डेरा’ सुनि दोकानदार आरो गम्भीर भऽ गेल। बाजल–

“दरभंगामे आएल राही-बटोहीकेँ जँ हम सभ पनाह नै देबै तँ आनठामक देलासँ हेतइ। पहिने चाह पीबू, जहाँ धरि सम्भव हएत, संग पुरब।”

दोकानदारकेँ अपने भाड़ाक दूटा कोठरी, जइमे एकटा खाली। ओना, तीन-चारि गोरेक अँटावेश भऽ सकै छै मुदा दू गोरे अलि-फलिसँ रहि सकैए। चाहक गिलास दोकानदार दुनू गोरेकेँ हाथमे धड़बैत, अपनो चाहक चुस्की लैत बाजल–

“भैयारी, जिनगीक कमाइ एकटा घर अछि, तहूमे बजरूआ घर छी, एक तँ चाहक दोकानदारकेँ घर-बाहर चुल्हिए-चुल्हि रहैए तँए ओहू घरक काज ओते नहियेँ रहैए।”

किशोर– “भैयारी! ने चाहक दोकानदार सभ गहिंकीकेँ एकरंग

खुश कऽ सकैए आ ने भाड़ादार। प्रश्न अछि केहेन घरक विद्यार्थी रहत। केहेन घर अछि?"

किशोरक बात सुनि दोकानदारकेँ अपन काजक सिनेह बढ़लै। बाजल–

"भैयारी, ओना छोट-छोट दोकानदार आ उट्ठा करबारी सभ भाड़ामे घर मंगैए, मुदा अपना मनमे परपन नै होइए। जेहने भाड़ादार रहत तेहने ने धियो-पुतो सीखत।"

किसलय–

"देखू, हम सभ पढ़ैले रहब, किछु दिनक पछाइत चलिये जाएब, तँए डेरा नीक हुअए?"

दोकानदार–

"की नीक?"

किसलय–

"एकान्त जगह होइ। एहेन नै होइ जे जैठाम वीणाक तारपर स्वर साधना होइ आ बगलमे लोहाक घन चलैत रहइ।"

अपन एकान्त जगह पाबि दोकानदार बाजल–

"एक तँ ओहिना अपना तीनियेँ गोरेक परिवार अछि। दुनू परानी चाहेक दोकानक जोगाड़मे रहै छी, सात-आठ बर्खक बेटा अछि, चाहै छी जे ओकरा कौलेज तक पढ़ाएब। अपने जे करै छी से करै छी मुदा बेटाकेँ मनुख बना ठाढ़ कऽ दिऐ, बस भऽ गेल अपन जिनगीक खेल।"

किशोर–

"चलू, तखन पहिने डेरे देख लेब। जँ रहैक गर लगि जाएत तँ परसुए किए ने चलि आएब।"

टोलक बीच दोकानदारक घर। गोटि पङ्गरा पक्का घर नै तँ केकरो

पजेबाक देबालपर एस्वेस्टस आकि खपड़ा तँ केकरो माटिक देबालपर खढ़क छार। तीन कोठरीक संग नहाइ-धोइक सभ बेवस्था केने।

कोठरी पसिन करैत किसलय बाजल–

“खाइ-पीबैक बेवस्था?”

दोकानदार बाजल–

“जँ अपने गामसँ चाउर-दालि आनि भानस करी सेहो बढ़ियाँ, नै तँ महिनवारी हिसाबसँ बनाइयो दइले कहब सेहो बढ़ियाँ।”

‘चाउर-दालि’ सुनि किशोर बाजल–

“आब ओ जुग-जमाना रहल जे लोक गामसँ चाउर-दालि बजार आनत। गामेमे किए ने बेचि ऐठाम कीनि लेत। एते दिन एहेन छेलै जे लोक बजरूआ चाउर-दालिकेँ दब आ घरैयाकेँ नीक बुझै छल आब से सभ थोड़े रहल। जाँतक तरका तरोटा जकाँ गाम अखनो कीलमे गराएले अछि, खेबा-पीबाक सामानसँ बजार भरि गेल अछि।”

ओही दोकानदारक घरमे दुनू गोरे (किशोर आ किसलय) छठम् बर्खक उतारमे पहुँच गेल।

शुभ काजमे बिलम नीक नै बुझि दुनू गोरे शनि दिन डेरासँ निकैल गाम विदा भेल। रस्तामे किसलय बाजल–

“पार्टनर, माघक सभ रबिकेँ मकड़क मेला होइ छै, एक तँ ओहिना माघ मास तैपर लोक भोरेसँ नहा-नहा भोला बाबाक जलधार करै छैथ। मकड़क सटले पनरह फागुनकेँ शिवरातिक मेला सेहो होइए।”

‘मकड़’ आ ‘शिवराति’ सुनि किशोर पेटक बात पेटेमे रखि चुपे रहल। दसे दिन बीचमे समय अछि तखन अनेरे डेढ़ मासक बात विचारब नीक नहि। जे अछि तहीमे ने अँटावेश करैक अछि। अँटावेश नै देख किशोर बाजल– “आब आगूक बात छोड़ू। कल्हुका मेला देख, मनकमना

पुरा लेब।"

किसलयक गाम। पिता दू भाँइ, एक भाँइ गिरहस्ती करैत दोसर हाइ स्कूलक शिक्षक। आन गामक स्कूल रहने गौरीनाथ बाहरे रहै छैथ, मुदा बाल-बच्चा आ परिवारकेँ गाममे रहने अठवारे शनिकेँ गाम आबि जाइ छैथ। ओना, किशोर आ किसलय गौरीनाथसँ पहिने पहुँच गेल छल मुदा साँझ पड़ैत गौरीनाथो पहुँच गेला।

दोसैर साँझमे दरबज्जाक ओसारक चौकीपर तीनू गोरे किशोरो, किसलयो आ गौरीनाथो बैसला। चाह-पान भेल। चाह पानक पछाइत गौरीनाथ किशोरकेँ परिचय पुछलैन–

"बाउ, अहाँक परिचय?"

परिचय सुनि किशोर तारतम्य करए लगल जे परिचय की? ईहो भऽ सकैए जे किसलयक संगी छी। मुदा संगीक की माने? की अपन नाओं, गामक संग पिताक नाओं कहिऐन? सभ अपरिचित, केना बुझता। लगले मनमे उठलै– अपन भाषा अपन सोभाव आ अपन जिनगी। मगहीमे अपन परिचय दैत किशोर बाजल–

"चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेला सुनै छी, जखन ऐठाम छीहे तखन मेला मेलक किए ने देख ली, तँए एलौं।"

गौरीनाथ बुझि गेला, मेलाक मेल सुनि बजला–

"बाउ, मनुखक रूप अनमोल छै, केना सिरजन, पालन आ संहार करैए से जानब असाध अछि, मेला तँ मेला छी पूजो होइए आ ताड़ी-दारूक दोकान सेहो रहैए। नीक आकि अधला बिनु देखने-सुनने बुझझो तँ नहियेँ सकै छी। भने समयपर चल एलौं, मकड़क समय आबिये गेल अछि।"

गौरीनाथक बात विरामक सीमानपर पहुँचलो ने छल आकि छोटकी बेटी राधा दोहरौनी चाह नेने पहुँचलै। मकड़क मेला सुनिते

राधाक मन लुसफुसाएल। हाँइ-हाँइ चाहक गिलास सभकेँ हाथमे धड़बैत बाजल–

"बाबू, काल्हि मकड़ कहाँ छी?"

राधाक बात सुनि गौरीनाथो आ किसलयो-किशोर हिसाब जोड़ि मिलबए लगल, किए ने काल्हि मकड़क मेला हएत? बाल-बोधक बातकेँ केते बुझल जाए, ईहो तँ प्रश्न ऐछे। मुदा दस बर्खक बच्चा झूठो तँ नहियेँ बाजि सकैए। केकरो मुँहक सुनल बाजल हएत। जँ नै होइक कारण पुछबै, सेहो नीक नहि। जँ एतबे सुनने होइ जे कौल्हुका मकड़ नै हएत। मुदा चुपो-चुप रहब तँ नीक नहियेँ। एते तँ जरूर बाजत जे फल्लाँक मुहेँ सुनलौं...।

गौरीनाथ पुछलखिन–

"बुची, कौल्हुका मकड़ किए ने हएत?"

राधा–

"कौल्हुका फोंक अछि।"

'फोंक' सुनि किशोर मने-मन विचारए लगल जे 'फोंक' तँ मटर-बदाम होइ छै, मेला केना 'फोंक' हएत! मखान फोंकला होइ छइ। ओना, मटरो-बदाम दोहरी फोंक होइए। किछुमे दने ने भरै छै आ किछुकेँ पीलुए खा जाइ छइ। मुदा से तँ किछु ने बाजल..!

गौरीनाथ राधाकेँ कहलखिन–

"आँगन जा माएसँ पुछि आबह जे ठीके कौल्हुका मकड़ फोंक जाएत?"

माइक नाओं सुनि राधा जिद्द करैत बाजल–

"अपना टोलक बहुत गोरे मेला जाइले रहैथ, जखन भाँज लगलैन जे कौल्हुका 'फोंक' जाएत, तखन ऐगला मकड़ देखैक विचार केलैन।"

किसलय–

“किशोर भाय, अहिना धोखा-धोखी होइ छइ। एलहाक चिन्ता छोड़ू। जँ जिनगी बँचल रहत तँ केते अवसर भेटत।”

❑ **साभार : अप्पन-बीरान**

झकास

सिरूआ पाबैनक तेसर दिन, पछिया हवा पच्छिमसँ मेघ-बादल अनलक। ओना, अपना ऐठाम बङ्गालक खाड़ीसँ बादल बनि मौनसुनी बरखा होइए, कहियोकाल पच्छिमसँ बर्फीली हवा चलि सेहो बरखा अनिते अछि। सएह भेल, मुदा बुन्न छोड़ि बरखा नै भऽ अदहा घन्टासँ खाली झकैस रहल अछि। ने सौन-भादोक बुन्न आ ने पूस-माघक पाला जकाँ, बीच-बिचौआ...।

दुआरपर बैसल घुरना काका खेती-वाड़ीक हिसाब जोड़ि रहल छैथ। जोड़ि रहल छैथ जे जँ अखन निम्मन बरखा होइत तँ मौसमे बदैल जाइत, नवका सालक खेतीमे हाथ लगि जाइत; से तँ नै भऽ रहल अछि मुदा तँए कि अकाजक भऽ रहल अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अनका जे हौउ, अप्पन खेती तँ सुतरिये रहल अछि...।

घुरना कक्काक मन फुल-फुलेलैन। फुलाइते बकार फुटलैन-

“अमृत बरिस रहल अछि।”

एक बेर, दू बेर, बेर-बेर एके बात मुहसँ निकलैत रहलैन-

“अमृत बरिस रहल अछि!”

हाइ स्कूलक दसम् किलासमे पढ़ैत रघुवीर दलानक ओसारक

दोसर भागमे कुरसीपर बैसल पिताक बात बेर-बेर 'अमृत' सुनि बाजल-

"काका, देखै छी जे होइए झकास आ अहाँ कहै छिऐ अमृत बरिस रहल अछि, से की? तेहेन जरल माटि अछि, खेत-पथारक जे भीजबो ने करत।"

रघुवीरक बात सुनि घुरना काका चुपे रहला। किछु बजैसँ पहिने तारतम्य करए लगला जे रघुवीर कोनो अनुचित तँ नहियेँ कहैए, मुदा अपन जे खेती अछि, सजमैनक खेती, तइले तँ अमृत बरसिये रहल अछि। काल्हि दमकलसँ पटेलौं, निच्चे-निच्चे पानि चलल जइसँ जड़ियो, माटि सटल लत्तियो आ पातो तँ पटबे कएल, मुदा माटिसँ ऊपर मुड़ियो आ ठाढ़ भेल पातो तँ ओहिना, बिनु पानिक रहि गेल जे ऐ झकाससँ भीजि रहल अछि। अनका जे हौउ, मुदा अपना-ले तँ अमृते बरिस रहल अछि...।

बजला-

"बौआ रघुवीर, खेतो आ खेतियो की सबहक एके रंग अछि जे एके रंग नीक-बेजए हएत। रंग-रंगक खेतियो छै आ रंग-रंगक लाभो-हानि।"

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ नै बुझि सकल, तेकर कारण भेल जे ओ खेतकेँ खेते आ फसिलकेँ फसिले बुझैए। ई नै बुझि पबैए जे फसिल-फसिलकेँ पानिक खगतो कम-बेसी होइ छइ। कोनो एहेन होइ छै जे डाँर लग तक पानिमे ओफा करैए तँ कोनो एहेन होइ छै जे जड़ि-पनियामे ओफा करैए आ कोनो एहनो होइ छै जे ऊपरेसँ छिच्चा पाबि ओफा करैए आ तहिना कोनो एहनो होइ छै जे जड़िये-जड़ि पटौलासँ ओफा करै छै...।

फेर दोहरबैत रघुवीर बाजल-

"काका, खेती तँ खेती भेल, तरखन मौसमक असैर तँ एके रंग ने

सभकेँ हएत।”

रघुवीरक प्रश्नक ओझरीकेँ सोझरबैत घुरना काका बजला-

“बौआ, अनकर बात छोड़ह। अपन देखहक। काल्हि सजमैनक खेत पटौने छेलौं किने, माटि तँ गिलगर भइये गेल अछि, मुदा ऊपरका पात आ मुड़ी भीजबे ने कएल। अछैते नमीए ओ पियासल रहि गेल। ओना, लत्तीक माध्यमसँ हाल पीबे करत मुदा अपना मुहेँ पीलासँ जे पानिक तृष्णा मेटाइ छै से थोड़े हएत। जे झकास झकैस रहल अछि ओ मुँहमे अमृत दऽ रहल अछि। जेते वाढ़ि आठ दिनमे हएत तेते एके दिनमे हएत। पाँचे दिनमे देखियहक जे दोबरा-तेबरा जाएत। जखने लत्ती बढ़ियाएत तखने ओइमे गिरहे-गिरह कनोजैरो चलत, फुलो चलत आ फुलबतियो चलत। यएह ने भेल अमृत बरिसब।”

अपना जनैत घुरना काका रघुवीरकेँ बुझबैत कहलैन मुदा बाल-बोध रघुवीर नीक जकाँ तैयो ने बुझि पेलक। बाजल-

“काका, पानि तँ पानि भेल, अमृत केना भेल?”

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे तामस नै भेलैन। भेलैन ई जे अखन रघुवीर बाल-बोध अछि, पानिक तरी-घटी नीक जकाँ नै बुझि रहल अछि...।

बुझबैत कहलखिन-

“बौआ, देखबहक जे स्वाती नक्षत्रक बुन्न सितुआक मुँहमे पड़ने मोती, बाँसक मुँहमे पड़ने वंशलोचन, केरा मुँहपर पड़ने करपूर आ साँपक मुँहमे पड़ने बीख बनि जाइए। रहैए एके चीज मुदा जगह-जगहपर बदैल जाइए।”

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ ने बुझबे कएल आ ने सोलहन्नी नहियेँ बुझलक। अधखिज्जू जकाँ अदहा-छिदहा बुझबो केलक आ अदहा-छिदहा नहियेँ बुझलक। बाजल-

“काका, एना किए होइए?”

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक रघुवीर ने नीक जकाँ बुझबे केलक आ ने नहियेँ बुझलक। बुझबो तँ असान नहियेँ अछि, ओझराएल तँ ऐछे...।

सोझरबैत बजला-

“बौआ, जहिना गाम-गामक पानि आ बोल किछु ने किछु बदलिये जाइए तहिना ने मासो-नक्षत्रक अछि।”

अखन धरि रघुवीर सालक पेटमे मास आ मासक पेटमे नक्षत्र बुझै छल, ई नै बुझै छल जे नक्षत्रक अपन हिसाब छै आ मासक अपन। तैसंग मलमास भेने सालोक सीमा-सरहद घुसैक-फुसैक जाइए...।

बाजल-

“एना किए होइए काका जे जखन एके पतालक पानि आ जमीनक वाणी होइए तखन बदैल किए जाइए?”

रघुवीरक प्रश्नकेँ गहींरतासँ लैत घुरना काका बजला-

“बौआ, एके सुरूज रहैत कहियो उत्तरायन तँ कहियो दछिनाइन भऽ जाइए। जइसँ मौसममे कहियो बदलाहट आबि जाइए। मौसम बदलने प्रकृतिक रूप-रंगमे सेहो बदलाउ आबिये जाइए।”

घुरना कक्काक उत्तर पाबि रघुवीर आरो ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एकटा पृथ्वी एकटा सुर्ज अछि तखन किए एना भऽ जाइए..!

बाजल-

“सुर्जक जगह बदलने, दुनियाँक रूपे-रंग बदैल जाइए?”

घुरना काका-

“हँ, बदैलते अछि। सुर्ज अपन सीमामे चलैए, धरती अपन सीमामे चलैए, तहिना आरो आरोक अछि। जइसँ सबहक आड़ि-धुरमे सेहो

बदलाउ आबि जाइ छइ। तहूमे अपना ऐठाम तँ आरो बेठेकान अछि। सालक बीच मौसम चलैए, मौसमक बीच मास चलैए आ मासक बीच नक्षत्र आ दिन चलैए।"

पिताक बात सुनि रघुवीर, बिना किछु सोच-विचार केने पुछलकैन-

"तखन तँ सभ सालक एके रंग मौसम होइत हेतइ?"

रघुवीरक सोझ प्रश्न सुनि घुरना काका बजला-

"यएह छी दुनियाँक पेंच। जइसँ सभ किछु ठेकनाएलो रहैए आ बेठेकनाएलो भऽ जाइए।"

रघुवीर-

"की ठेकान आ की बेठेकान?"

घुरना काका-

"ठेकान ई जे जखन सुरूज दछिनाइन रहैए तखन ओइठामक मौसममे गरमाहट आबि जाइ छै आ दूर भेने उत्तराइनमे ठन्ढाहट आबि जाइ छइ। जइसँ विपरीत मौसम बनि जाइ छइ। विपरीत मौसम बनने विपरीत रूपो-रंग बनि जाइए। तहूमे अपना ऐठाम तँ मासोक सीमा-सरहद गजपटे अछि। सीमा गजपट भेने रीतुओ गजपटाइए जाइए।"

रघुवीर-

"से की?"

घुरना काका-

"देखहक, अपना ऐठाम तीस दिनक मास तिथिक अनुरूप सेहो चलैए, ओना, तहूमे घटी-बढ़ी भइये जाइ छइ। दोसर सकराँइतक हिसाबसँ सेहो चलैए। ओना, सालमे बारहेटा अमावसियो, पुरनिमो आ सकराँइत सेहो होइए मुदा नक्षत्र सत्ताइसटा भऽ जाइए। जेकर बेठेकान

हिसाब भऽ जाइ छइ। कोनो सोलह दिनक तँ कोनो तेरहे दिनक भऽ जाइए। तहिना पुरनिमो सकराँइतिक अछि आ रीतुक सेहो।"

पिताक बात रघुवीर कनी-मनी बुझबो केलक आ कनी-मनी नहियोँ बुझलक। बाजल-

"रीतु केना बेठेकान अछि?"

बेटाक जिज्ञासासँ घुरना कक्काक मन फुदकलैन। फुदैकते बजला-

"बौआ, सरोसती पूजा अमावसिआ-पुरनिमा मासक हिसाबसँ बीस माघ कैँ होइए जइ दिनसँ वसन्तक आगमन मानल जाइ छइ। जखन कि सालमे छहटा रीतु भेने चैत-बैशाखकेँ वसन्त सेहो मानल जाइए। तोहीं कहऽ, जे दस दिन माघ भेल, तहूमे सकराँइतिक मास केमहर अछि तेकरा छोड़ि कऽ, मास दिन फागुन भेल, तेकर पछाइत चैत भेल आ चैतक पछाइत बैशाख, भेल?"

रघुवीर-

"हँ, से तँ भेल।"

मुस्की दैत काका बजला-

"सोझ हिसाबे तीन मास दस दिनक वसन्त रीतु भेल।"

जहिना कोनो गबैयाकेँ ध्वनि आ शब्द-लहैर केतौ अनायास भेटने मन मन्दिरमे बेर-बेर घूँघरूक चालि पकैड़ रमकए चाहैए, तहिना रघुवीरकेँ सेहो वसन्तक गीत मनमे उमकल। संगीतमय दुनियाँमे केतौ केकरो प्रेम रस भेटैत तँ केकरो बिरह भेटैत, केकरो शान्ति रस भेटैत तँ केकरो अशान्ति, ई तँ अपन-अपन नजैर आ नजैरक पानिक अनुकूल भेटै छै, जे जेना तहिना रघुवीरकेँ सेहो भेटल। जहिना गुलावक पहिल कलिक कलियाएल फूलक सौन्दर्य आ साल-सालक फुलाएल गाछक फूलक शोभामे होइत तहिना रघुवीरकेँ सेहो भेल। बाजल-

“काका, कनी उघारि कऽ वसन्त गीत कहियौ?”

रघुवीरक पिता घुरना काका। गामक अधिकांश लोक हुनका काका कहैन जइसँ अपनो बेटा-बेटी कक्के कहै छैन। ओना, काका ‘पित्तीकेँ’ कहल जाइ छै, जे पितासँ छोटो आ पैघो होइ छैथ, मुदा घुरना कक्काक मनमे से नै रहैन। हुनका मनमे रहैन जे जँ घरसँ बाहर धरि एकबट्ट सभ कहैए तँ नीके भेल किने। मुदा तहूसँ बेसी नीक ई ने भेल जे जहिना अपन बेटा-बेटी तहिना टोलो-पड़ोस आ समाजोक। तखन तँ अपन कर्तव्य बनिते अछि जे सभकेँ एक्के नजरिये देखिऐ। रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना काका बजला-

“बौआ, जइ दिन वसन्तक आगमन होइए, तइ दिन सरोसती पूजा आ लछमी पूजा सेहो होइए। मुदा पुजेगरी बदलने रंग-वेदरंग भऽ जाइए। खाएर जे हौउ, जखन वसन्तक बाट पुछलह तँ कहिये दइ छिअ।”

रघुवीरकेँ प्रश्नक जड़ि बुझैक ललक मनमे जोर मारिते रहइ! बाजल-

“काका, अनेरे अहाँ केतए-सँ-केतए बोहिया जाइ छी। कनी सरि भऽ कऽ सेरिया दियौ।”

बेटाक मनक भूख जेना घुरना काका बुझि गेला। बाल-बोधक भूखकेँ जँ माए-बाप नै बुझै तँ दोसर आन के केकरा बुझत। बुझबो केना करत, सभकेँ तँ अपने-अपने छै...।

बजला-

“जइ दिन सरोसती पूजा होइए ओही दिन वसन्तक आगमन सेहो रंग-अबीर उड़बैत होइए। होइए आकि नै होइए?”

तालमे ताल मिलबैत रघुवीर कहलकैन-

“हँ से तँ होइते अछि।”

जहिना कथ्थकक हूँहकारी पाबि कथ्थकर कथनकेँ कथियबैए तहिना घुरना काका बजला-

“बौआ, बीस माघकेँ जइ दिन सरोसती-लछमीक आवाहन होइ छै तही दिन कड़कड़ाएल जुआनी जाड़क सेहो रहैए। ओस बदैल पाला, पले किए, बरफाएल पाला दिन-राति झहड़ैए, वएह ने कुहि फाड़ैत अदहा फागुनमे शिवरातिक रूप पकैड़ सिरूआ दिन भाँग-धुथुर ओढ़ि नचबो करैए आ चैतावरक संग वसन्त आ वसन्तक संग बरहमासासँ कदमक गाछक मचकीपर झूलैत गेबो करैए?”

रघुवीरक भक्क जेना दिशांस लगलकेँ होइ छै, तहिना वसन्तक बीस माघसँ तीस बैशाखक डोर पकड़ा गेल। बाजल किछु ने मुदा पिताक मुस्कीमे अपन मुस्की जोड़ि नजैर-मे-नजैर मिलबैत मुस्कियए लगल।

गामक मात्र सवा बीघा जमीनक हिस्सेदार घुरना काका, जेतबे अपना जमीन छैन तहीमे अपन परिवारकेँ समाजक बीच जीवित रखने छैथ। बाल-बच्चाकेँ अपन ओकाइत देखबैत कहै छथिन-

“बौआ, अपना ओते ओकाइत नै अछि जे बड़का-बड़का एजुकेशन इन्सिच्यूटमे पढ़ेबह, मुदा पढ़ैसँ रोकबो तँ नहियेँ करबह। तखन एते तँ कहबे करबह जे अदहा समय अपन उन्नैतक लेल आ अदहा परिवारक लेल उपयोग केने जिनगीक पाठ जरूर पढ़ि लेबह।”

‘जिनगीक पाठ’ सुनिते रघुवीरकेँ जेना मनपर भार पड़ल। बोझ तर दबाएलक बोल जहिना दबाइत स्वरमे फुटैए तहिना रघुवीरक दबाएल स्वर फूटल-

“जिनगीक की पाठ?”

हँसैत घुरना काका बजला-

“ऐ धरतीपर सभ कनैत आबि रंग-मञ्चपर ठाढ़ होइए, तइमे कियो कनैत जिनगी बितबैत कनैत उसरन करैए आ कियो मुस्कियाइत मुस्कान

भरैत मुरली टेरैत विसरन करैए। यएह भेल जिनगी आ जिनगीक पाठ।”

पिताक बात सुनि रघुवीर आएल-गेल पाँतिकेँ पँतियबैत अपन सरूप देखए लगल। मुदा जननिहार आ बिनु जननिहारक बीच जहिना चुपा-चुपी होइ छै तहिना रघुवीरो आ घुरनो कक्काक बीच चुपा-चुपी पसैर गेल।

❑ **साभार : बाल गोपाल**

ठोररंगू

जहिना जेठुआ बीआ, अधखरूआ रोप, आसिनक सिहकी पाबि अगते कातिकमे रंगवा धान ठोररंगू हुअ लगैत तहिना बीस बर्खक पछाइत परदेशसँ घुमि गाम एलापर सुवोधकेँ भेल। होइतो अहिना छै जे कोनो बात-विचार पेटमे घुरियाइत रहत आ मुँहमे एबे ने करत...। अनभुआर जकाँ सुवोध पत्नीकेँ कहलक- “जेना किछु भेट रहल अछि तहिना मनमे उठैए।”

‘किछु भेट रहल अछि’ सुनि श्यामाक मन चमकलैन। एतेटा दुनियाँमे एते चीज अछि, तइमे ‘किछु भेट रहल अछि’ ई की भेल? दुनियाँक तँ सभ किछु सोझेमे अछि, तखन हरेलैन कथी जे भेट रहल छैन? श्यामाक मन अपने विचारमे ओझरा गेलैन तँए किछु जवाब फुरबे ने केलैन। चीजक कमी छै जे दुनियाँमे किछु ने भेटत। मुदा एते तँ अनुभव श्यामाकेँ रहबे करैन जे केता बेर लॉटरी टिकटसँ भाग्य अजमाएले छैन, जे किछु ने भेटल आकि भेटैबला अछि। तखन एहेन विचार मनमे उचरलैन केना? उचरब आ उचारब दुनू होइए। एकटा भेल उचड़ीन जे खोंखैर-खांखैर खाइए से आ दोसर भेल रटनमा जे सदैत रटिते रहैए से। मुदा अखैन धरिक, बाइस बर्खक जिनगी, श्यामा सुवोधक संग गुजारि चुकल छेली, तँए तीत-मीठक बहुत किछुसँ परिचित भऽ चुकल

छेली। तँए अगुता कऽ किछु बाजऽ नै चाहलैन। मुदा दू गोरेक बीच जँ सवाल-जवाब, उत्तरा-चौड़ी नै भेल, तँ दुनू गोरेक बात-विचारक रस की रहल। मुदा अनरनेबामे आमक रसक सुआद आ केरामे बेलक सुआदो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तखन? तखन की! पतिक विचारक धारकेँ मुँह बान्हब नीक हएत, कनी किनछरि दबि किए ने देख कऽ अजमा ली। बजली-

"ठेकना कऽ देखियौ, अहाँक भेटलाहा की हमर नइ भेल?"

भिनसुरका समय चाहक बैसारपर दुनू परानी सुवोध गप-सप्प उठौने। पत्नीक बात सुवोधकेँ ने तीते लागल आ ने मीठे। मनमे उपकलै-ई की भेल जे ठेकना कऽ देखियौ? ठेकानो की सदैत ठेकाने रहैए, ठेकान-बेठेकानक कोनो आड़ि-धूर छइ। सदैत जिनगीक धारमे चीत-पट, उनटैत-पुनटैत प्रवाहित होइत चलैए। मुदा आड़ा केतौ थोड़े लगै छइ। श्यामो अपन विचार-वाण छोड़ि चुप भऽ गेल छेली। मुदा सुवोधक मन पाछू घुसैक कऽ नाचल। नाचल ई जे जिनगी दू दिशामे प्रवाहित होइए, एक स्वावलम्वी दोसर परावलम्वी।

कियो अपन मनोनुकूल जिनगी तखने पाबि सकैए जखन ओ स्वावलंवी हएत। अपन सभ किछु रहतै, कर्मक संग सदैत विचड़ैत रहत, अपनाकेँ चलबैत रहत। मुदा हमरा तँ से नै भेल। घर छोड़ि जहिया निकललौं तहियासँ कारखानामे नोकरी करैत एलौं। फेर मन आगू बढ़लै, आगू ई बढ़लै जे नोकरी करैक विवशता किए आएल। ऐठाम आबि सुवोध ठमैक गेल। अपने बाजल बातमे जेना किछु भेटए लगलै, वाण बनि आगूसँ आपस आबि छाती खोधए लगलै। जेना रोड़ा-पत्थरक चोट माथमे लगलासँ चौन्ह आबि आँखिमे इजोत छिटकैत, तहिना सुवोधकेँ सेहो भेल। नजैर उठा पत्नीपर गाड़लक तँ बुझि पड़लै भरिसक पत्नी झुट्ठा बुझि विचारकेँ पाछूए दिस गुड़का देलैन। गुड़काएब उचित भेल? मुदा उचित मनमे अबिते अनुचितो उठि कऽ ठाढ़ भऽ अपन पक्ष रखलक। पक्ष

ई रखलक जे अनुचिते की भेल? जे प्रेमी-प्रेमिकाक जिनगीक वादा कऽ हाथ पकैड़ संग आएल, ओ कहाँ पूर भऽ सकलै। सभ दिन किछु ने किछु अभाव रहबे कएल जे से खगता रहल, खगैत रहल। निच्चाँ खसैत सुवोधक मन पाछू खर्ग बनि खगता उनैट तकलक तँ सुवोधकेँ बुझि पड़लै जे खसैत जरूर एलौं, मुदा खसि पड़लौं, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। संग मिलि सृष्टिक सिरजन केबे केलौं, पेटसँ लऽ कऽ बर-बेमारीक बिपैत भगैबते एलौं, फेर मन किए धिक्कारि रहल अछि? हँ एते जरूर भेल जे अनका जकाँ खर्च कऽ बच्चाकेँ नै पढ़बै छी, अनका जकाँ बर-बेमारीक इलाज नै करबै छी, एकर माने तँ ईहो नहियेँ भेल जे बाल-बच्चाकेँ नै पढ़बै छी आकि बर-बेमारीसँ रक्षा नै करै छिऐ। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जाएत जे जे सपना सभ देख पुरबऽ चाहैए, से नै भेल। मुदा नै भेल सेहो केना मानल जाएत, आगू-पाछू, अगल-बगल ऊपर-नीचाँ सभतरि तँ सपने लटकल अछि, तैठाम केते सपना लोक पुरौत। मुदा सेहो केना कहल जेतइ, केकरो सपना सपनौती बनि जिनगीक बाट देखबै छै तँ केकरो सपना सपनाइते ससैर जाइ छइ। पुन: सुवोधक नजैर पत्नीपर गेलै तँ बुझि पड़लै जे श्यामा भरिसक निराश भऽ गेल छैथ। जिनगी तँ वएह ने भेल जे आशाक बाट पकैड़ आशावान बनि जीवन गुदस करए। जखने आशा छुटल तखने निराशाक आगमन भेल। निराशे ने मृत्यु सद्दश भेल...! एहेन स्थितिमे सुवोध गाम आएल छल। मुदा जहिना श्यामा निराश छैथ तेकर विपरीत तहिना सुवोध आशावान अछि। बीस बर्खक कारखानाक नोकरी सुवोधकेँ जिनगीक बहुत किछु देलक, बहुत किछु लेलक। मुदा दुनू लाभे सुवोधकेँ भेल। पहिल जीबैक ढंग- सीमित आयमे चलब- देलकै, तँ अनकर देखौंस लेबो केलकै। अवगुण गेने आमदनी केता गुणा बढ़ि जाइ छइ। अखैन सुवोध ओ सुबोधक सीमापर आबि ठाढ़ अछि, जेतए परिवारमे माइक संग पत्नी आ तीनटा बच्चो छइ। आब सुवोध ओ सुबोध नै जे स्कूल-कौलेजक

जिनगीमे छल।

आब सुवोधकेँ अपन हारल जिनगीक कथा पत्नीओंकेँ सुना अपन कलंक धोऐमे कनियोँ लाज नै हएत। मन ठमकलै। पिता-पीढ़ीक इतिहास आ अपन इतिहासक बीच विचार आबि लटैक गेल। किम्हरो देखबे ने करै जे परिवार अपन खेतीक उपार्जनसँ समयानुसार हमरा बी.ए. तकक शिक्षा देलैन। ओ परिवार आइ बेठेकान भऽ गेल अछि। अपन पुश्तैनी सम्पैतक संग अपन श्रमकेँ जोड़ि चलैक छल से नै भेल? मुदा से किए ने सोचि पेलौं!

'किए ने सोचि पेलौं!' लग अबिते सुवोध ठकमूड़ भऽ गेल। ठकमूड़ ई जे साधारण पढ़ल पत्नी छैथ, अपने तँ से नै छेलौं मुदा चुकलौं तँ दुनू गोरे। दुइए गोरे किए, परिवारे। परिवारक स्तर तँ गवाही दाइए रहल अछि। धिये-पुतेकेँ केहेन पढ़ै-लिखै, खाइ-पीऐक ओरियान कऽ पेलौं अछि। अपन भार फेकैत सुवोध मुस्की भरैत बाजल-

"संग मिलि हारब आ संग मिलि जीतब, ने हार भेल आ ने जीत भेल।"

सोझ-साझ पतिक बात सुनि श्यामा सकपकेली। मुदा मुँहमे बोल हेराएले रहैन। की बाजब! मुदा संगिनीक रूपमे तँ हमहीं छिऐन, जँ हंस-हंसिनीक लोलक घोघ नै भरि पेलौं तखन संगीयेँ की? सभ दिनसँ पुरुखक ढाठी रहल जे नीक भेल तँ हम केलौं आ अधला भेल ते पत्नीपर झाड़ि देलौं। मुदा अनठेकानी किछु बाजबो तँ नीक नहियेँ हएत। तखन? हँ तखन किए ने! हार कि जीत की भेल, आ तइमे केते हम केलौं आ केते ओ- पति- केलैन तइ हिसाबे हार-जीत हएत आकि सहरगंजा..? गर अँटबैत-अँटबैत श्यामा बजली-

"मने-मन गुर-चाउर खेने नइ हएत। नर-मेदक बात छी, जँ कनियोँ छह-पाँच भेल तँ नरकोमे घीचम-तीर हएत।"

पत्नीक बात सुनि सुवोध अपन पढ़ब-लिखब दिस नजैर बढ़ौलक। गामक स्कूलमे जखन पढ़ैत रही, सभ चटियासँ नीक हमर कियारी रहए। जइमे फूलो-गाछ लगबी आ आनो-आनो चीजक। मिडिल स्कूल अबैत ओ छूटि गेल। मुदा एते तँ मनमे आबिये गेल रहए जे मैट्रिक पास करि कऽ नोकरी करब।

मैट्रिक पास केला पछाइत अपनाकेँ निम्न कोटिक नोकर बुझि आगू पढ़ैक विचार केलौं। पिता दिससँ कोनो बाधा कहियो उपस्थित नै भेल। आने गारजन जकाँ ओहो पढ़ै-लिखैकेँ धर्मक काज बुझि अन्धभक्त छला। बी.ए. केला पछाइत हम अपनाकेँ अपन श्रम बेचैले अपनाकेँ पूर्ण तैयार कऽ लेलौं। ओना, पितोजीक एहेन इच्छा नहियेँ रहैन जे बेटा आगू नै बढ़ए। तँए ओ पूर्ण स्वतंत्रता देने रहैथ। सभ माए-बाप चाहैए जे बेटा जेहेन कमासुत हएत तेहेन परिवार हरल-भरल बनत। समय पाबि बिआहो कइये देलैन। जेना अपन सोलहन्नी भारसँ निचेन भऽ गेला। दू सालक पछाइत दुरागमन भेल। तैबीच नोकरीक पाछू रेठान शुरू केलौं। एक तँ अहुना गाम-घरमे जे काज छै ओकरा पढ़ल-लिखल लोक करै ने चाहैए। साल भरि समय निकैल गेल। गाम छोड़ैले बाध्य भऽ गेलौं। मनमे बाध्य अबिते सुवोधक नजैर पुन: दोहरा कऽ श्यामाकेँ निहारए लगलै। अपन तिनवटी जिनगीपर आबि अँटैक गेल। तिनवटी माने एक अपन परिवार, दोसर दिस सासुरक परिवारसँ आएल पत्नी आ दुनू परिवार, दुनू परिवारसँ हटि महानगरक नव परिवार बनाएब। मुदा उमंगक लहैर तीनू परिवारमे। मनमे अबिते सुवोध बाजल-

“जहिना महानगर जिनगीमे आएल आ गेल तहिना देखते-सुनिते जिनगियो चलि जाएत। तइले जे मनहानि करब तइसँ किछु भेटत।”

सुवोधक बात जेना श्यामाकेँ छातीमे लगलैन। लगिते छाती धकधकेलैन। बजली-

“कहियो ठर-ठेकानसँ केतौ नइ रहलौं।”

पत्नीक बात सुनि सुवोधकेँ नोकरीक बीसो बर्खक समय मनमे नाचि उठल। केते खुशी ओइ दिन अपना संग परिवारोकेँ भेल रहै मुदा भेल की? एना किए भेल? एक तँ कारखानादार अपने बड़का कारखानाक शिकार भेल, तैपर ओहो चलौनिहार- श्रमिक-केँ शिकार कैरते रहए। जइके चलैत तीन बेर हड़ताल भेल। बिना कोनो हँ-निहँसक दू-बेरक हड़ताल समाप्त भेल। मुदा तेसर खेप, जखन श्रमिक ऐगला श्रमिककेँ नोकरी समाप्त होइक समय भेल तखन ओ सभ आगूक अन्हार जिनगी देख अगुआ कऽ तड़तालक संग तालाबंदी केलक। कारखाना बन्द भेल आ नोकरी केनिहारक नोकरियो गेल।

नोकरी छुटला पछाइत सुवोध अपनाकेँ ओहन करताइत बुझलक जे ने दोसर तरहक कारखानामे काज कऽ सकैए आ ने अपन बपौती छह बीघा जमीनकेँ उपयोग कऽ सकैए। पिताक मृत्युक पछाइत खेत-पथारक कोनो थीरी-थमन नै रहलै। मुदा गाम एलाक आठ दिनक पछाइत सुवोधक मन संकल्पक संग उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ ई भेल जे जखन दुनियाँक सभ बाट बन्न भऽ गेल अछि, तैबीच आगू केना जिनगी चलत। मुदा जखन छह बीघा खेतक कीमत अँकलक तखन मनमे बिसवास जगलै जे एते पूजीक मालिक अपने छी जे ठाठसँ अपन कारोबार ठाढ़ कऽ परिवार चला सकै छी। यएह विचार सुवोधक मनमे उपकल। जोरक उधुक्का मनमे लगिते सुवोध बाजल-

“मूलवान वस्तु भेट गेल। आब खगता अछि दुनू गोरे विचारि कऽ अपन-अपन काजक भार उठा चली। जेहेन चालि चलब तेहेन ढालि धरब। जेहेन ढालि धरब तेहेन माइन पाएब।”

पतिक बात सुनि श्यामा बजली-

“अपन जिनगी जे भेल से भेल, मुदा बालो-बच्चा हँसैत जीबए

सएह ने कहब।"

पत्नीक विचार सुनि सुवोध विह्वल भऽ गेल। मुदा अपन हारल लोक बाजए तँ नै चाहैए जे सुवोध बाजत। तरसँ जेना मन उपकलै, उपैकते फुटलै-

"हमरा सन जे छह से हमरो बात सुनह, मानह नै मानह, ई तोहर मनक बात भेलह। मुदा हमरो मनक तँ यएह ने बात भेल।"

पतिक बात सुनि श्यामा सुवोध श्याम देखए लगली। हंस-हंसिनीक जोड़ीक जोड़।

❑ **साभार : उकड़ू समय**

हकार

ओछाइनपर सँ उठल नइ रही मुदा नीन टुटि गेल रहए। जवाबदेह लोक जहिना नीन टुटिते सिरमा तरसँ डायरी निकालि दिनक कार्यक्रमपर नजैर चढ़ा चैनसँ ओछाइन छोड़ैत, तहिना अपन काज दिस नजैर खिड़ेलौं।

घरसँ जखने नजैर निकलल कि जगरनाथ कक्काक घरक न्योंपर चलि गेल। रहैक घर बनेता तेकरे नीब लेता, सएह हकार काल्हिये बेरूपहर देलैन। सूहकारैत कहि देने रहिऐन जे समयसँ दस-पाँच मिनट पहिने जरूर आएब। जे भरोस हुनका छैन्हे। मुदा लगले भेल जे काल्हि कहाँ आइए ने बेरूपहर हकार देने छला। जाबे ओछाइनपर सँ उठि नव सुर्जक दर्शन नइ भेल ताबे तक तँ आइए ने भेल। आइ भेल कि काल्हि भेल, तइमे अनेरे अपनाकेँ ओझड़बए चाहै छी, कियो बारह बजे रातिक पछाइतेसँ नव दिन बुझए लगैए तँ कियो जखने नीन टुटल तखनेसँ तँ अपना सन-सन लोक अठबजिया ओछाइन छोड़ि बुझै छी। किए ने बूझब, स्वतंत्र देशमे जँ एतबो स्वतंत्रता नइ भेल तँ स्वतंत्रते की भेल?

मुदा पत्नियोँ तँ पत्नीए छैथ, ओ तँ सदैत संग पुरिते छैथ। एते तँ विचार मनमे छैन्हे जे सदिकाल पतिक अनुकूल रहबो करिऐन आ बनेनौं रहिऐन। जँ अपन विचारे चलितैथ तँ अपन समयसँ चाह बना हमरो नीन

तोड़ि चाह पीऐबतैथ आ अपनो पीबितैथ। मुदा से नइ, बुझल छैन्हे जे नीन टुटलापर दस मिनट देह-हाथ सोझ करैमे लगबे करै छैन, तैबीच चाह बना लइ छी आ प्रेमसँ आगूमे बैस दिनक पहिल चहरा अहरामे दइ छिऐन। मुदा भोरेसँ गजपट हएब शुरू भेल। नीन तँ टुटि गेल रहए मुदा देह-हाथ सोझ करै दुआरे नै उठलौं, नइ उठैक कारण मनमे हकार उठि गेल। ओही विचारमे लगि गेलौं। मुदा पत्नी बुझली जे अखन सुतले छैथ। जेकर फल भेल जे चाह पीला पछाइत जेना मन हल्लुक होइए से नइ भेल। मनमे जगरनाथ कक्काक हकार हुकड़ए लगल, मुदा मन फरीच नइ रहने हकारक गोड़ा पकड़बे ने करए। घरक न्यौं लेता। घरे परिवार बनैए आ परिवारे घर। मुदा बीचक समय-संयोग नीक रहल। नीक ई रहल जे असमसानक लहास देख जहिना गीध सभ हरकट्टा भौर लइत आँखियेपर चोट करैत तहिना पत्नी आँखि लग आबि देखली जे नीन टुटलैन की नहि। मुदा लाभ उनटा भेल, जखने लग अबए लगली कि झपटैत कहलयैन–

"नअ बजेक हकार जगरनाथ काका देने छैथ, झब दे चाह बनाउ, अङ्कस-मङ्कस करिते समय भऽ जाएत। दसो-पाँच मिनट पहिने नइ जाएब, से केहेन हएत?"

मुदा संयोगे औझुका खराप अछि। एक हवाइ चप्पल कि जूता हरेने जहिना लोक दोसरकेँ जुमा कऽ कातमे फेक दइए तहिना पत्नी झपटि लेलैन–

"अहाँक मन खीरपुड़िया हकारपर टँगल अछि आ हमर?"

मुदा एते वेचारी रच्छ रखली जे कौआ-कुकुर जकाँ लोल कि मुहसँ पकैड़ घीच्चम-तीर नै केलैन, अनुशासित पत्नी जकाँ चाह बनबए गेली। मुदा अपन मन पुन: दोसर घुरछीमे ओझरा गेल। पत्नी कि बाजि गेली जे 'खीरपुड़िया हकार..?' काका सोझहे हकार देलैन, खीरपुड़िया केतएसँ चलि आएल। मन औनाइते रहए कि पत्नी हाथमे चाह नेने ठाढ़ भऽ

गेली। पैछला सभ बात बिसैर गेलौं। चाह हाथमे पकड़बैत पत्नी बजली–

"औझुका दिन शुभ अछि।"

पत्नीक बात नीक नै लगल। नीको केना लगैत, अपने बेर-बेर गजपटेमे पड़ै छी आ भऽ गेल शुभ! जहिना चाहसँ मुँह पकल छल तेहने पाकल बोल मुहसँ निकलल–

"शुभ-अशुभक असीरवाद अहीं मुँहमे अछि।"

वेचारी किछु बजली नहि। की मनमे उठलैन की नै से तँ ओ जानैथ मुदा दोसराक घरक हकार पुरब नान्हिटा बात नइ छी। गुरु-शिष्य जकाँ पत्नी आगूमे बैस गेली। रंग-रूप देख जेना मनमे झड़क उठि गेल। झड़को केना ने उठैत, शुभ-अशुभ तँ काजक फल छी- जेहेन काज तेहेन फल, आकि मुँहक ठकुआ परसाद छी..?

..जेना-जेना पेटमे चाह निजाइत गेल तेना-तेना तामसो कम होइत गेल। जे बात अपने नइ बुझि पेलौं मुदा पारखी पत्नी परेख गेली। परेखते जेना ओ बमरोटिया हाथे टीक पकड़ैक कोशिश केलैन माने रंग-रंगक भभटपन पसारि...।

..मुदा परिस्थितिकेँ विपरीत कहियौ आकि सुरीत, घरक न्योँक हकार अछि, अखन तक घर-अँगनाक बात पत्नीए बुझैत एली अछि, अपने तँ किछु बुझै नइ छी। जहाँ धरि देखैक बात अछि से तँ खढ़-खुट्टा, भीत आ काँच पजेबाक देवाल छोड़ि आगू देखलौं नहि, तैठाम ईंटा-सीमेट, लोहाक बात अछि! की बूझब आ की बाजब। दस लोकमे मुहोँ बन्न राखब अपनाकेँ पाछू मुहेँ धकियाएब भेल। मुदा गलती तँ पछुआ पकैड़ नेने अछि। माने ई जहिना जगरनाथ काका हकार देलैन तहिना मानि लेलिऐन। अनेरे अपने चालिये ओझरीमे फँसि गेलौं। फेर मनमे भेल जे जे हूसि गेल से हूसि गेल मुदा ओकरा...। नै जाएब तँ कहबे करता जे फल्लाँ चारि साए बीस अछि। गपक कोनो ठौर-ठेकान नइ छै, बाजत

किछु करत किछु। तहूमे जँ चाहो-ताहोक ओरियान केने होथि, तखन नइ गेने- हेए चाहपत्ती-चीनीक खर्च नइ हेतैन मुदा दूधक दाम तँ दुरि भइये जेतैन। बेटाक सुमारक लोक बिसैर जाइए, पाइक सुमारक थोड़े बिसरल जाइ छइ। फेर मन अपनापर सँ जगरनाथ काकापर पहुँचल। मन तमतमाएल रहबे करए, धारक पानि जकाँ तमतमाइत आगू बढ़ि गेल। की सोचि जगरनाथ काका हकार देलैन! हम कहिया ईंटा-सिमटीक घर बनेलौं जे हुनका हकार देने छेलिऐन?

मुदा फेर मन घुसकल। घुसकल ई जे जखन जगरनाथ काका भीत-घरसँ ईंटा-सिमटीक घरमे प्रवेश करए जा रहल छैथ आ श्रद्धापूर्वक हकार देलैन तँ नहियोँ जाएबकेँ उचित नहियेँ कहल जा सकैए। मन ठमकल, मुदा बेसीकाल ठमकल रहल नहि। चारिटा बेटा जगरनाथ काकाकेँ छैन, पाँचम अपने भेला। परिवारक भीतरो तँ परिवार अछिए। एक भैयारीक परिवारमे बाल-बच्चाक आगमन रहैए जइसँ ओछाइन-बिछाइनसँ लऽ कऽ घर-ओसार धरि किछु-ने-किछु विकृत भइये जाइए, दोसर भैयारीकेँ दस बर्ख पूर्ब एहेन समस्या छेलैन आ नइ छैन तँए घर-ओसारक सेखी बरबैर केना रहत।

मुदा जेते मन आगू दिस ससरए तेते जाले-जाल, महजालमे फँसल जाइ। घड़ीपर नजैर पड़िते मन चौंक गेल। चौंकते निर्णय केलौं जे हकरिया जकाँ नइ समांग जकाँ जगरनाथ कक्काक संग बेवहार करब।

मुदा लगले भेल जे चामेक मुँह छी, कहीं गपक सहमे किछु बजा गेल जे जगरनाथ काका-ले अबघात होइन तखन तँ आरो गड़बड़ हएत। पत्नी दिस नजैर उठेलौं तँ बुझि पड़ल जे ओ टीक पकैड़ चानिपर चढ़ए चाहि रहली अछि। कि बिच्चेमे धक-दे मनमे उठल, 'की खीरपुड़िया हकार' बजल छेली। गर पबिते बजलौं–

"अहाँ बिच्चेमे तखन की टपैक गेल छेलौं- खीरपुड़िया हकार?

काका तँ सोझहे मुहेँ हकार देलैन आ सोझहे मुहेँ सूहकारि लेलिऐन।"

मुदा पत्नियोँ कि पत्नी छैथ ओ लालबुझक्करि जकाँ बुझि गेली जे अहिना पुरुख-पात केतौ विदा होइकाल रोब झाड़िते छैथ जे जूता-चप्पल गंदा अछि केना लोक लग एहेन पहीरि कऽ जाएब। मुदा मूल प्रश्न तँ अछि जे ईंटा-सिमटीक घरक माने भेल पचास बर्ख ऐगला जिनगीक रहैक ठौर, चारि भाँइक भैयारीक घर, केना बनौल जाए? जेना ओ बुझिते छेली कि की, बजली–

"भिनसुरका चाह पीब लेलौं से बड़बढ़ियाँ, झब-दे नहा कऽ ओइठाम चलि जाउ।"

पत्नीक सह पाबि अपन सह मारैत बजलौं–

"जखन घरसँ बहरा आनठाम जाएब तखन किछु अनजल नइ कऽ लेब से नीक हएत?"

पत्नीकेँ जेना बुझले रहैन कि की झपाटा मारलैन–

"शुभ मुहूर्तमे घरक न्योँ लेल जाएत। केना पैछला पुरुखा ऐगला-ले गाछी-कलम, पोखैर-इनार, इस्कूल-अस्पताल बना सेवाक दुआर खोलने रहला तहिना ने बुझए पड़त जे आगूओ अहिना खुजल रहइ।"

ओना, पत्नीक सभ बात नीक नाहित नइ बुझलौं, मुदा एते बुझैमे आबि गेल जे जहिना आइ घरक न्योँ हँसी-खुशीसँ जगरनाथ काका लेता तहिना सभ दिन परिवार हँसैत बास करैन।

समयसँ अदहा घन्टा पहिने- साढ़े दस बजे- जगरनाथ काका ऐठाम पहुँचलौं। पुरना दरबज्जापर असगरे जगरनाथ काका बैसल चौचंग रहैथ। देखते जेना मनमे उत्तकण्ठ जगलैन। जेना हमरा एने हुनकर घर बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल होइन, बुझि पड़ल जे तहिना भेलैन। बुढ़ाएल देह रहितो जेना पानि चढ़ि गेल होइन तहिना चौकीपर सँ उठि दहिना डेन पकैड़ देखबैले विदा भेला। मुदा से भेलैन नहि। मलेटरी जकाँ परिवारक

सभ अपन-अपन काजपर कनखड़ल। जेठकी पुतोहु- जे हमरा भावो हेती- बिच्चेमे दू गिलास चास नेने पहुँच बजली–

“पानियों पीथिन।”

भैंसूर-भावोक बीचक बात छी। ओना, वंशगत भावो सेहो होइ छैथ, आ समाजगत सेहो। ऐठाम समाजगत अछि। भैंसूर-भावोक बीच बाजब वर्जित अछि। भैयारी बीचक कोनो बात-विचार भैयारीक भेल। ओना, नीक काज शुभ होइत अछि तहूमे जगरनाथ काका तीन जोड़ ऊपर छैथ, तँए मने नइ हृदैमे सेहो खुशी छैन्हे। खुशियो केना ने रहतैन, अपन ओहन घर बनि रहल छैन, जे जिनगीमे दोहरा कऽ समस्या नइ हेतैन। तैसंग ईहो देख रहल छैथ जे चारू बेटो, जे बीस बर्खसँ चालीस बर्खक अछि ओकरो सभकेँ भरिसक पार-घाट लागिये जेतइ। तैसंग जे छोट-छोट बच्चा अछि ओकरो पचास-साठि बर्खक सेवा भइये रहल छइ। अपने चुपे रही कि बिच्चेमे जगरनाथ काका कहलखिन–

“पानियेँ किए, पुड़ी-परसाद सेहो खेबे करता। जाउ, अहाँ अपन काज देखू। दुनू-बापूत चाहो पीब आ बतियेबो करब।”

जगरनाथ कक्काक मनमे तेते खुशी पइस गेल रहैन जे चाहो अदहा मुँहमे जानि अदहा ठोरपर होइत नीचे खसि पड़ैन। चाहक इच्छा ओते नइ जेते किछु बजैक मन रहैन। पुतोहुकेँ गवाही रखि बजला जे दुनू-बापूत बतियाइ छी। हमरो हरल ने फुरल पुछलयैन–

“काका, अपनेक तँ आँखि-मुना मानैबला लोक छी, अपने हकार बजलिऐ, हम सूहकारि लेलौं।”

हमर बात जेना जगरनाथ काका नीक जकाँ नइ बुझलैन। अधखरूआ बुझि पड़लैन आकि की। बाल-बोध बच्चा जकाँ मुँह दिस मुँह तकए लगला। जेना हुनकर आँखि आँखिमे पइस गेल। पैसते बुझि पड़ल जे अखन दुइए गोरे छी। काका गुरुए भेला, हम चेले भेलिऐन। जँ कियो

तेसर रहैत तँ लाजो होइत। मुदा जँ गुरु लग अपन बात लाजे छिपाएब आकि कोनो रोग डॉक्टर लग आ झर-झगराक बात ओकिल लग तँ ओ अशुभ छोड़ि शुभ नइ...। जेना तरसँ उधुक्का मारलक तहिना भेल। कहलयैन–

"काका, हकारकेँ पत्नी तेना लिड़ी-बीड़ी करए लगली, जे किछु फुरबे ने कएल।"

आगू बजैले बात ऐबते रहए कि बिच्चेमे जगरनाथ काका लोकि लेलैन। बजला–

"बौआ, हकारक बात पाछू करब पहिने बतिआइ जे छी से कहै छिअ।"

काका-बातक कोनो अरथे ने लगल। की बतिआइ छी? मुदा आँखि देखते ओ बुझि गेला। बजला–

"गप-सप्प जे करै छी बतियाएब भेल। तहिना जखन खेत जोत-कोर होइत बतिआइए तखन ओ खेत गहुम-जअक बीआ पचबै-जोकर भऽ जाइए। तहिना घरो निच्चाँ सँ तैयार होइत ऊपर छड़ा रहै जोकर बनि जाइए तखन ओ अन्तिम बातीसँ बान्हि बतिआएल जाइए।"

ओना, कक्काक विचार कानकेँ सुनैमे नीक लागए मुदा मन भीतरे-भीतर उविआइत रहए जे पत्नीक नालिस हाइ-कोर्टमे केने छी, देखा चाही, फैसला केकर अनुकूल होइए। मुदा बीचमे टोकबो केना करबैन। तहूमे पत्नीक प्रश्न लऽ कऽ। लगले कहि देता जे पत्नी जोड़ू होइ छैथ, तँए करखनो तोरो जोड़ऽ पड़तह आ करखनो हुनको जोड़ए पड़तैन। मुदा तेहेन कोसी-कमला धारक वेग जकाँ काका उधिआ रहल छैथ जे हुनका पकैड़ अनैमे अपनो भँसि जाएब। सेहो डर हुअए। मुदा सुतरल, कहलयैन–

"काका, आइ ते घरक नाउएँ लेब, तखन जे मठौठक बाती बान्हि बतिअबै छी..?"

शिकारी काका शिकार पकैड़ लेलैन। शिकारीकेँ आनन्द तँ शिकारे पछुअबैमे अबै छइ। ओ बुझि गेला जे पत्नीक बात पहिने बुझए चाहैए। एक्केबेर मोड़ि बजला–

“बौआ, अपना ऐठामक ताना-बना विशाल अछि। विशालक माने ई भेल जे जइमे सबहक अँटावेस अछि।”

कक्काक सहटैत विचार देख सह दैत बजलौं–

“काका, खीरपुड़िया हकार की भेल?”

बजैक झोंकमे तँ बाजि गेलौं, मुदा कक्काक जे मुखमण्डल देखलयैन तइसँ बुझि पड़ल जे ओ भरिसक बुझि गेला जे घरवालीक बात पुछलक हेन। मुदा कक्काक तँ अँखिमुना विचार घर छिऐन तँए लाजे-संकोच किए हएत। बजला–

“बौआ, जेते रंगक अपना ऐठाम काज अछि तेते रंगक हकारोक बेवहार अछि। अखन तँ धड़फड़ीमे छी। जँ गप शुरू करब आ बिच्चेमे जइ काजक स्थापना करब ओकर जँ कोनो खगता उपस्थित भऽ जाएत तखन जँ नाँगैर बुझने रहबहक तँ मुँह छुटि जेतह आ मुँह बुझने रहबहक तँ नाँगैर छुटि जेतह।”

कक्काक विचार सुनि बुझि पड़ल जे काका काज दिस घरमुहाँ भऽ गेल छैथ तँए बातकेँ आगू बढ़बैत पुछलयैन–

“काका, घरक न्योँ लेब, तइमे खाइ-पीबैक ओरियान अनेरे किए केलौं।”

हमर बात सुनि काका घड़ी दिस नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे पान-सात मिनट जगह फाँक अछि। बजला–

“बौआ, खाइ-पीबैक बेवहार सेहो अपना ऐठाम, एहेन सूत्र बनौने अछि जइमे समाजक सबहक खान-पीनक चलैन चलि रहल अछि। केतौ जातीय तँ केतौ समाजिक, जनारक रूपमे हरिजन, तँ भोज-भण्डारामे

सहरगंजा।"

आगू बजैले बाँकीए रहैन कि बिच्चेमे मोबाइल टनटनेलैन। घरक कारीगरक संग जेठका बेटा पहुँच रहल छैन। कक्काक काज देख कहलयैन–

"काका, हमहूँ समांगे छी, अपना सिमटी-ईंटाक घर नइ अछि जे किछु बुझल रहैत। तखन अहाँ लग रहब, हाथक आँगुरक इशारासँ जे कहब से करब।"

चारू दिससँ सभ समांग पहुँच पूजा शुरू केलैन। खीर-पुड़ीक परसाद। कोदारिक पूजा करैत न्योँ खुनब शुरू भेल।

❑ **साभार : अपन मन अपन धन**

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

जिगेसा
लेहाज
जानक मोल
समर्पण
स्तब्ध

भोरक झगड़ा
शालीनता
पान
पवनक विवेक
हरवाहि

समरथाइक भूत
समता
सुखाएल सूरत
खजाना
मौसी

कर्ज : 2
टुटल मनक जुटान
ऐँठ साड़ी
अस्तित्वक समाप्ति
जाति नहि पानि

विदाइ
कर्तव्यपरायन सुगा
निशाँ
दान-दैछना
माइक वचन

मथाहाथ
पाइक मोल
गंजन
नमहर फेरा
अपन काज

बेटपन
उमेद
एकोटा ने
कथनी नै करनी
मुसाइ पण्डित

घरवास
भूल
बत्तीसोअना
पुरनी भौजी
अर्द्धांगिनी

पेटगनाह

गंगा नहेलौं

बकठाँइ

गुलेती दास

खर्च

डॉक्टर हेमन्त

मनुखक मूल्य

तीन जुगिया भाय

आश्रम नहि सोभाव बदली

मायराम

शुभचिन्तक

विधवा बिआह

वैष्णवी भगवती

प्रेमी

शंका

मुइलो बिसेबैन

प्रतिभा

केतौ नै

हमर कोन दोख

असगरे

डीहक बटबारा

मूलधन

छूआ

लफ साग

नहरकन्हा

अपन सन मुँह

पाप आ पुण्य

चोरक चोरबती

मातृभूमि

कटा-कटी

हरदीक हरदा

बेरपर

झगड़ाउ-झोटैला

फॉगु

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर

पतझाड़

धरम काँट

तिलासंक्रान्तिक लाइ

कठफल

असहाज	बेटीक लिलसा
बाबा बेलेश्वरनाथ	पुरान साड़ी
भोँटक गहमी	अभिनव अनुभव
जेतए जे हौउ	अड़िकट्टा चोर
नौमीक हकार	उझट बात
एकतीस मार्च	बहिन
अगिलह	मर्माहत
स्वर्ग आ नर्क	अलपुरिया बरी
पीरारक फड़	दुधियाएल बरखा
मनकेँ फुसलबै छी	चोरूक्का झगड़ा
अकास दीप	त्राहि-कृष्ण
माघ नहाइले जाएब	संकट
अतहतह	काँच सूत
चौरचनक दही	बीरांगना : 2
तेतर भाइक कविता	सोग
अपन रोपल गाछी भुताहि	विघटन
डभियाएल गाम	बगदल गाम
अखरा-दोखरा	कलंक
गाछपर सँ खसला	उनटन
सोनाक सुइत	विद्रूताक मद

क्रान्तियोग

पाही पट्टी

गोहाइर

मरियाएल मन

मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी

आशापर पानि पड़ल

बुढ़िया दादी

बाबी

बुधनी दादी : 1

क्रियाशील

समझौता

रत्न गमेवाक दुख

भाइक सिनेह

हारि

जाम

विदाइ-दैछना

टाइपिस्ट

गजपट खेती

सुआद

अनेरुआ बेटा

कछमछी

समदाही

वारंट

एकाग्रचित

गलगर भैंस

प्रवल इच्छा

अधखरूआ

मोहरा

भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ

अपने केलहा

समुद्री विद्या

बीरांगना : 1

अनुशासन

बिहरन

हारि-जीत : 1

अपसोच

अपन पुरखाक डीह

खलओदार

पढ़ल सुगा बौक

गेल माघ उनतीस दिन बाँकी

मान

बालमण्डली

नीक बोल

कियो ने

स्वरोजगार

झिसीक मजा

लतियाएल जिनगी

सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी

सड़ल दारीम

बटखौक

स्मृति शेष

बिसवास

हाथी आ मूस

गामक बान्ह

पनचैती

भबडाह

दूरी

गामक मुँह फेर देखब

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

चौकीदारी

देव उठान

अनदिना

सुमति

आशापर पानि फेर गेल

चर्मरोग

केतौ ने रहलौं

मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया

पुरस्कार

फुसियाह

गामक सुरता

कचोट

जेकर चुन तेकर पुन

एते दिन अपना-ले आब अनका-ले

रमैत जोगी बोहैत पानि

पनचैती पनपना गेल

जेठुआ गरदा

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9789388421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452